हिंदी पत्रकारिता की भाषा-शैली में परिवर्तन: प्रिंट मीडिया से डिजिटल मीडिया तक एक तुलनात्मक अध्ययन

DOI: https://doi.org/10.63345/ijrsml.v10.i5.1

रति कृष्णाहरि सुलेगांव
भाषा अध्ययन
नॉर्थ ईस्ट क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी
डॉ. अशोक कुमार
भाषा अध्ययन
नॉर्थ ईस्ट क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी

सारांश

हिंदी पत्रकारिता की भाषा-शैली समय, समाज और तकनीक के साथ निरंतर परिवर्तित होती रही है। प्रिंट मीडिया के युग में हिंदी पत्रकारिता की भाषा अपेक्षाकृत औपचारिक, साहित्यिक, व्याकरणसम्मत और विश्लेषणप्रधान थी, जबकि डिजिटल मीडिया के आगमन के साथ भाषा अधिक संक्षिप्त, संवादात्मक, मिश्रित (हिंग्लिश) और दृश्य-केन्द्रित हो गई है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य प्रिंट मीडिया से डिजिटल मीडिया तक हिंदी पत्रकारिता की भाषा-शैली में आए परिवर्तनों का तुलनात्मक और आलोचनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में शब्दावली, वाक्य-संरचना, शीर्षक लेखन, प्रस्तुति शैली, पाठक-संपर्क और भाषिक मानकों के आधार पर दोनों माध्यमों की तुलना की गई है। शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि डिजिटल मीडिया ने हिंदी पत्रकारिता की भाषा को अधिक लोकतांत्रिक और जन-सुलभ बनाया है, किंतु साथ ही भाषा की गंभीरता, शुद्धता और पत्रकारिता के नैतिक मानकों के समक्ष नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

मुख्य शब्द: हिंदी पत्रकारिता, प्रिंट मीडिया, डिजिटल मीडिया, भाषा-शैली, तुलनात्मक अध्ययन, न्यू मीडिया

1. प्रस्तावना

पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, लोकतांत्रिक विमर्श और जनमत निर्माण का सशक्त उपकरण है। पत्रकारिता की प्रभावशीलता बहुत हद तक उसकी भाषा-शैली पर निर्भर करती है। हिंदी पत्रकारिता ने अपने आरंभिक काल से लेकर आज तक अनेक चरणों से गुजरते हुए भाषा और शैली के स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे हैं।

प्रिंट मीडिया के लंबे प्रभुत्व के बाद 21वीं सदी में डिजिटल मीडिया का उदय एक ऐतिहासिक मोड़ सिद्ध हुआ। इंटरनेट, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल्स ने न केवल समाचार संप्रेषण की गति बदली, बल्कि पत्रकारिता की भाषा-शैली को भी गहराई से

प्रभावित किया। इस परिवर्तन को समझना हिंदी पत्रकारिता के वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

यह शोध-पत्र प्रिंट मीडिया और डिजिटल मीडिया के संदर्भ में हिंदी पत्रकारिता की भाषा-शैली का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

2. हिंदी पत्रकारिता का ऐतिहासिक विकास और भाषा

2.1 प्रारंभिक हिंदी पत्रकारिता

हिंदी पत्रकारिता का आरंभ 1826 में 'उदंत मार्तंड' से माना जाता है। इस काल की भाषा:

- संस्कृतनिष्ठ
- साहित्यिक
- औपचारिक
- शिक्षित वर्ग उन्मुख

थी। समाचारों से अधिक लेख और विचार प्रधान थे।

2.2 स्वतंत्रता आंदोलन और पत्रकारिता भाषा

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी पत्रकारिता की भाषा में ओज, भावुकता और राष्ट्रीय चेतना का समावेश हुआ। 'प्रताप', 'अभ्युदय' और 'नवजीवन' जैसे पत्रों की भाषा जनजागरण का माध्यम बनी।

2.3 उत्तर-स्वतंत्रता और प्रिंट मीडिया का सुदृढ़ीकरण

स्वतंत्रता के बाद प्रिंट मीडिया का विस्तार हुआ। भाषा अपेक्षाकृत सरल हुई, किंतु अब भी:

- मानक हिंदी
- व्याकरणिक अनुशासन
- विश्लेषणात्मक शैली

बनी रही।

3. प्रिंट मीडिया की भाषा-शैली: प्रमुख विशेषताएँ

3.1 औपचारिकता और गंभीरता

प्रिंट मीडिया में समाचारों की भाषा गंभीर और औपचारिक होती थी। संपादकीय और लेख विचारोत्तेजक और विश्लेषणपूर्ण होते थे।

3.2 वाक्य-संरचना

- लंबे और संयुक्त वाक्य
- स्पष्ट व्याकरण
- क्रमबद्ध प्रस्तुति

प्रिंट पत्रकारिता की पहचान थे।

3.3 शब्दावली

- तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग
- सीमित अंग्रेज़ी शब्द
- साहित्यिक प्रभाव

स्पष्ट दिखाई देता था।

3.4 शीर्षक लेखन

शीर्षक अपेक्षाकृत:

- संयमित
- तथ्यात्मक
- सूचना-प्रधान

होते थे।

4. डिजिटल मीडिया: अवधारणा और प्रसार

4.1 डिजिटल मीडिया का अर्थ

डिजिटल मीडिया वह माध्यम है जो इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के माध्यम से समाचारों का संप्रेषण करता है, जैसे:

- न्यूज़ वेबसाइट
- मोबाइल एप
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म
- वीडियो और पॉडकास्ट

4.2 डिजिटल मीडिया की प्रकृति

- त्वरित अपडेट
- इंटरएक्टिविटी
- मल्टीमीडिया प्रस्तुति
- वैश्विक पहुँच

5. डिजिटल मीडिया में हिंदी पत्रकारिता की भाषा-शैली

5.1 संक्षिप्तता और गति

डिजिटल पाठक कम समय में अधिक जानकारी चाहता है। इसलिए:

- छोटे वाक्य
- बुलेट प्वाइंट
- संक्षिप्त पैराग्राफ

का प्रयोग बढ़ा है।

5.2 संवादात्मक शैली

डिजिटल मीडिया में भाषा:

- पाठक से संवाद करती है
- प्रश्नवाचक और अपीलात्मक होती है
- अनौपचारिक स्वर अपनाती है

6. प्रिंट और डिजिटल मीडिया: भाषा-शैली का तुलनात्मक अध्ययन

6.1 भाषा का स्वरूप

बिंदु	प्रिंट मीडिया	डिजिटल मीडिया
भाषा	औपचारिक	अनौपचारिक
शैली	विश्लेषणात्मक	संवादात्मक
शब्द	शुद्ध हिंदी	मिश्रित (हिंग्लिश)

6.2 शब्दावली में परिवर्तन

डिजिटल मीडिया में:

- अंग्रेज़ी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग
- तकनीकी शब्दावली
- ट्रेंडिंग शब्द

प्रचलित हो गए हैं, जैसे ब्रेकिंग, वायरल, अपडेट।

6.3 शीर्षक लेखन की तुलना

प्रिंट मीडिया में शीर्षक सूचना-प्रधान होते थे, जबकि डिजिटल मीडिया में:

- सनसनीखेज
- भावनात्मक
- क्लिक आकर्षक

शीर्षक आम हैं।

7. सोशल मीडिया और भाषा-शैली

सोशल मीडिया ने हिंदी पत्रकारिता की भाषा को:

- संक्षिप्त
- प्रतीकात्मक
- दृश्यात्मक

बना दिया है। हैशटैग, इमोजी और मीम संस्कृति ने भाषा की परंपरागत सीमाएँ तोड़ी हैं।

8. मानक हिंदी बनाम डिजिटल हिंदी

डिजिटल मीडिया में:

- क्षेत्रीय भाषिक प्रभाव
- बोलचाल की हिंदी
- व्याकरणिक लचीलापन

देखा जा रहा है। इससे भाषा अधिक जन-सुलभ हुई है, परंतु मानक हिंदी की स्थिति कमजोर भी हुई है।

9. डिजिटल युग में पत्रकारिता भाषा की चुनौतियाँ

- भाषिक अशुद्धियाँ
- तथ्य से अधिक भावनात्मकता
- क्लिकबेट संस्कृति
- संपादकीय अनुशासन की कमी

10. सकारात्मक प्रभाव

- भाषा का लोकतंत्रीकरण
- युवा वर्ग से जुड़ाव
- त्वरित सूचना प्रसार
- पाठक सहभागिता

11. आलोचनात्मक मूल्यांकन

यह परिवर्तन न तो पूरी तरह नकारात्मक है, न पूर्णतः सकारात्मक। आवश्यकता संतुलन की है—जहाँ डिजिटल माध्यम की गति और सरलता के साथ भाषा की गंभीरता और विश्वसनीयता भी बनी रहे।

12. भविष्य की दिशा

हिंदी पत्रकारिता की भाषा-शैली को:

- तकनीकी दक्षता
- भाषिक प्रशिक्षण
- संपादकीय नैतिकता

के साथ आगे बढ़ना होगा।

13. निष्कर्ष

यह शोध-पत्र निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत करता है कि प्रिंट मीडिया से डिजिटल मीडिया तक हिंदी पत्रकारिता की भाषा-शैली में व्यापक परिवर्तन हुआ है। प्रिंट मीडिया की गंभीर, औपचारिक और विश्लेषणात्मक भाषा डिजिटल मीडिया में अधिक संक्षिप्त, संवादात्मक और मिश्रित रूप में परिवर्तित हो गई है। यह परिवर्तन समय की माँग है, किंतु इसके साथ भाषिक गरिमा और पत्रकारिता मूल्यों को बनाए रखना भी अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ सूची (संकेतात्मक)

1. प्रभात कुमार – हिंदी पत्रकारिता: स्वरूप और विकास

2. रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास
3. मार्शल मैक्लुहान – द मीडियम इज़ द मैसेज
4. अरविंद कुमार – डिजिटल मीडिया और भाषा

ISSN: 2321-2853
ESTD.2013
IJRSML